चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	11-9.25	4	7-8

THE TIMES OF INDIA

IA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER | To subscribe call 1800 1200 004 or visit subscribe.timesofindia.com

HAU develops new heat-tolerant wheat

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Hisar, has developed a new late-sown wheat variety, WH 1309, which promises high yields even under high March temperatures of 35–37°C. The variety was developed by a team from the university's Wheat and Barley Section, including Dr Vikram Singh, M,S. Dalal, O.P. Bishnoi, the late Divya Phogat, and others. Vice chancellor Prof B.R. Kamboj said WH 1309 was recommended by Haryana's State Seed Sub-Committee. "Due to delayed paddy harvesting, waterlogging, or other factors, wheat sowing often gets delayed in 15–20% of Haryana's fields. This new variety, developed for late sowing, will give farmers better returns," he said.

In irrigated trials, WH 1309 recorded an average yield of 55.4 quintals per hectare, with a maximum of 64.5 quintals per hectare. On farmers' fields across Haryana, it yielded 54.3 quintals per hectare, about 12.7% higher than the existing WH 1124 variety (48.2 quintals per hectare). Even sowings done as late as January gave 40–50 quintals per hectare. The variety is resistant to yellow rust, brown rust, and other diseases, and is suitable for organic as well as saline areas. It features long ears, bold and shiny grains, early maturity, and improved quality traits.

Nutritional Value

According to Agriculture Dean Dr S.K. Pahuja, WH 1309 produces ears in 83 days and matures in 123 days. With a plant height of 98 cm, the risk of lodging is minimal. The variety contains 13.2% protein, a hectolitre weight of 81.9 kg/HL, and a sedimentation value of 54 ml, making it suitable for chapati-making and nutrition. Research director Dr Rajbir Garg advised that sowing should be done between December 1–20, using 125 kg seed per hectare. For best results, farmers should apply 150 kg nitrogen, 60 kg phosphorus, 30 kg potash, and 25 kg zinc sulphate per hectare.

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	11-9-25	3	1-4

दैनिक जागरण

डब्ल्यूएच 1309 गेहूं गर्मी सहने के साथ देगी अच्छी पैदावार

जागरण संवाददाता • हिसार: किसानों के लिए एक महत्वपूर्ण समाचार है, जो गर्मी के प्रभाव से फसल की गुणवत्ता को बचाने में सहायक होगा। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने गेहूं की एक नई पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309 विकसित की है, जो गर्मी को सहन करने में सक्षम है। यह किस्म हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च में बढ़ती गर्मी से फसल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस नई किस्म की पैदावार पर तापमान का असर नहीं होगा। इसके पौष्टिक गुण और रोटी बनाने के लिए इसकी गुणवत्ता इसे विशेष बनाते हैं।

गेहूं की नई किस्म

- हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने विकसित की किस्म
- फसल का दाना छोटा होने और उसके खराब होने का डर अब खत्म
- पौष्टिकता से भरपूर है गेहूं की यह किस्म, रोटी का स्वाद भी होगा अच्छा
- हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में हो जाती है देरी

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज पत्रकारों से बातचीत करते हुए • जागरण

10 से 12 साल का समय लगता है एक नई किस्म को विकसित करने में

बिजाई का समय एक से 20 दिसंबर

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि डब्ल्यूएच 1309 की बिजाई का उचित समय एक दिसंबर से 20 दिसंबर है। बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर होनी चाहिए। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. एसके पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यूएच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती है और 123 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी ऊंचाई 98 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस नई किस्म के विकास में डा. विक्रम सिंह, एमएस दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाईपीएस सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का योगदान रहा है।

कुलपति ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव और अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी होती है। वैज्ञानिकों की टीम ने इस नई किस्म को विकसित किया है, जो सिंचित परिस्थितियों में औसत 55.4 क्विंटल/हेक्टेयर की उपज देती है। इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हेक्टेयर तक पहुंची है। विभिन्न जिलों में किए गए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हेक्टेयर रही, जो चेक किस्म डब्ल्यूएच 1124 (48.2 क्विंटल/हेक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक है। कुलपति ने बताया कि एक नई किस्म को विकसित करने में 10 से 12 साल का समय लगता है।

नई किस्म डब्ल्यूएच 1309 को जनवरी के पहले सप्ताह तक बोया जा सकता है, जिससे किसानों को अधिक लाभ होगा। इस किस्म के दाने मोटे और चमकीले होते हैं। यह पीला रतुआ, भुरा रतुआ और अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। आगामी कृषि मेलें से नई किस्म मिलनी शुरू हो जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	11-9-25	3	1-4

दैनिक भास्कर

भास्कर खास 20 दिसंबर तक कर सकते हैं बिजाई; पीला और भूरा रतुआ प्रतिरोधी

गेहूं की नई पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309 विकसित; 35 से 40 डिग्री तापमान में भी देगी अच्छी पैदावार, 123 दिन में होगी तैयार

भास्कर न्यूज़ | हिसार

गेहूं की नई वेरायटी की जानकारी देते हकृवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309 विकसित की है। यह 35 से 40 डिग्री तापमान में भी अच्छी पैदावार देगी। इस किस्म का हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में खेतों किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 48.2 क्विंटल/हैक्टेयर की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही। जनवरी के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुवाई की जा सकती है। इस किस्म की पैदावार 40-50 क्विंटल/हैक्टेयर रही। यह किस्म पीला रतुआ, भूरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म जैविक खेती के लिए भी उपयुक्त है। यह लंबी बालियां, शीघ्र पकाव एवं मोटे दाने वाली उन्नत किस्म है। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि डब्ल्यू एच 1309 की बिजाई का उचित समय 1 से 20 दिसंबर है और बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है।

कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यूएच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती हैं तथा 123 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी व भूरे रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 98 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इसमें 13.2 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वजन 81.9 केजी/एचएल व अवसादन मान 54 मिली है। अतः पौष्टिकता व चपाती बनाने के लिए यह किस्म अच्छी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	11-9-25	4	1-4

उपलब्धि: हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई तापमान रोधी पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309

तापमान में बढ़ौतरी के बावजूद अधिक पैदावार देने में सक्षम किस्म : प्रो. काम्बोज

एक किस्म विकसित करने में लग जाता है 10-12 साल का समय

हिसार, 10 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यू एच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस किस्म का हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च के महीने में तापमान की बढ़ौतरी देखी गई है जिससे गेहूं की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस किस्म की पैदावार पर तापमान के बढ़ने का असर नहीं होगा। 35 से 37 डिग्री सैल्सियस तक तापमान में इस किस्म पर विपरित प्रभाव नहीं पड़ता।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नई किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए बताया कि एक किस्म को विकसित करने में 10-12 साल लग जाते हैं। पिछले 4 सालों में हकृवि 40 किस्में विभिन्न फसलों विकसित कर चुका है। कुलपति प्रो. काम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में किसानों के खेत पर किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो कि चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 (48.2 क्विंटल/हैक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए।

कब तक हो सकती है इस किस्म की बिजाई

कुलपति ने बताया कि जनवरी के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुवाई की जा सकती है। जनवरी माह के दौरान किसानों के खेत पर की गई बिजाई का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा रहा, जिसमें इस किस्म की पैदावार 40-50 क्विंटल/हैक्टेयर रही।

इस किस्म से पछेती बिजाई करने वाले हरियाणा के किसानों को अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म जैविक खेती के लिए भी उपयुक्त है व इसे लवणीय क्षेत्र में भी बोया जा सकता है। यह लंबी बालियां, शीघ्र पकाव एवं मोटे दाने वाली उन्नत किस्म है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 की बिजाई का उचित समय एक दिसम्बर से 20 दिसम्बर है तथा बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यू एच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती है तथा 123 दिन में पक कर तैयार हो जाती है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। इस टीम में डॉ. विक्रम सिंह, एम.एस. दलाल, ओ.पी. बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाई.पी. एस. सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आर.एस. बैनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	11-9-25	9	3-8

अधिक तापमान में भी किसानों को गेहूं की मिलेगी ज्यादा पैदावार: प्रो. काम्बोज

हकृवि ने गेहूं की पछेती किस्म WH1309 की विकसित

हरिभूमि न्यूज >> हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यू एच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस किस्म का हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च के महीने में तापमान की बढ़ोतरी देखी गई है जिससे गेहूं की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस किस्म की पैदावार पर तापमान के बढ़ने का असर नहीं होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने नई किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई दी। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है।

प्रति हैक्टेयर औसतन 54.3 क्विंटल पैदावार

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में किसानों के खेत पर किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो कि चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 (48.2 क्विंटल/हैक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही। उन्होंने बताया कि जनवरी के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुवाई की जा सकती है। जनवरी माह के दौरान किसानों के खेत पर की गई बिजाई का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा रहा जिसमें इस किस्म की पैदावार 40-50 क्विंटल/हैक्टेयर रही। इसके दाने मोटे व चमकीले होते हैं। इस किस्म से पछेती बिजाई करने वाले हरियाणा के किसानों को अधिक लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि यह किस्म पीला रतुआ, भुरा रतुआ व अन्य बीमारियों के प्रति रोगरोधी है। यह किस्म जैविक खेती के लिए भी उपयुक्त है व इसे लवणीय क्षेत्र में भी बोया जा सकता है। यह लंबी बालियां, शीघ्र पकाव एवं मोटे दाने वाली उन्नत किस्म है।

हिसार : पत्रकारों से बातचीत करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। इस टीम में डॉ. विक्रम सिंह, एमएस दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाईपीएस सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आरएस बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

डब्ल्यू एच 1309 किस्म की विशेषताएं

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यू एच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती है तथा 123 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी व भूरे रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 98 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 13.2 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वजन 81.9 केजी/एचएल व अवसादन मान 54 मि.ली. है। पौष्टिकता व चपाती बनाने के लिए यह किस्म अच्छी है।

बिजाई का उचित समय, बीज व खाद की मात्रा

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 की बिजाई का उचित समय एक दिसम्बर से 20 दिसम्बर है तथा बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नाइट्रोजन 150, फास्फोरस 60, पोटाश 30, जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। यह नई किस्म पछेती बिजाई वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	11-9-25	5	5-8

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई तापमान रोधी पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309

तापमान में बढ़ोतरी के बावजूद अधिक पैदावार देने में सक्षम डब्ल्यूएच 1309 : प्रो. काम्बोज

हिसार, 10 सितम्बर (विरेंद्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यूएच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस किस्म का हरियांणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च के महीने में तापमान की बढ़ोतरी देखी गई है जिससे गेहूं की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस किस्म की पैदावार पर तापमान के बढने का असर नहीं होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नई किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई दी।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में किसानों के खेत पर किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो कि चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 (48.2 क्विंटल/हैक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही।

डब्ल्यूएच 1309 की बिजाई का उचित समय, बीज व खाद की मात्रा : अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 की बिजाई का उचित समय एक दिसम्बर से 20 दिसम्बर है तथा बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नाइट्रोजन 150, फास्फोरस 60, पोटाश 30, जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। यह नई किस्म पछेती बिजाई वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

डब्ल्यू एच 1309 किस्म की विशेषताएं : कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यू एच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती है तथा 123 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी व भूरे रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 98 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 13.2 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वजन 81.9 केजी/एचएल व अवसादन मान 54 मि.ली. है। अतः पौष्टिकता व चपाती बनाने के लिए यह किस्म अच्छी है।

इन वैज्ञानिकों का रहा अहम योगदान : विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। इस टीम में डॉ. विक्रम सिंह, एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाई.पी. एस. सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आर.एस. बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	11-9-25	2	1-3

बढ़े तापमान में ज्यादा उत्पादन देगी गेहूं की नई किस्म

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने विकसित की डब्ल्यूएच 1309 किस्म

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने गेहूं की नई किस्म डब्ल्यूएच 1309 विकसित की है। यह किस्म मार्च महीने में बढ़े तापमान को भी सहन कर सकेगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह किस्म हरियाणा समेत उत्तर भारत के किसानों के लिए वरदान साबित होगी। यह नई किस्म देर से बुआई करने वाले किसानों के लिए विशेष रूप से लाभकारी होगी और गेहूं की पैदावार में महत्वपूर्ण बढ़ोतरी करेगी।

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

मीडिया से बातचीत में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम की ओर से गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। जनवरी के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुआई की जा सकती है। जनवरी माह के दौरान किसानों के खेत पर की गई बिजाई का प्रदर्शन भी बहुत अच्छा रहा है, जिसमें इस किस्म की पैदावार 40-50 क्विंटल/हेक्टेयर रही। इसके दाने मोटे व चमकीले होते हैं। इस किस्म से पछेती बिजाई करने वाले हरियाणा के किसानों को अधिक लाभ मिलेगा।

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार, सिंचित परिस्थितियों में इस किस्म की औसत उपज 55.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक रही है। यह किस्म पारंपरिक किस्मों की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है। इसकी बालियां लंबी, दाने मोटे और चमकदार होते हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि गेहूं की इस किस्म की बुआई का उत्तम समय 1 से 20 दिसंबर है। बुआई के लिए बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखी गई है। अधिकतम उपज पाने के लिए 150 किलो नाइट्रोजन, 60 किलो फास्फोरस, 30 किलो पोटाश और 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टेयर की सिफारिश की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	11-9-25	5	7-8

एचएयू ने विकसित की गेहूं की नई किस्म

हिसार, 10 सितंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (सीसीएचएयू) के गेहूं एवं जौ अनुभाग ने गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यू एच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस नई किस्म को विकसित करने में वालों में डॉ. विक्रम सिंह, एमएस दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट (स्वर्गीय), योगेंद्र, कुमार, हर्ष, सोमबीर, वाईपीएस सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आर.एस. बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.9.2025	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई तापमान रोधी पछेती किस्म डब्ल्यूएच 1309 : प्रो. बीआर काम्बोज

तापमान में बढ़ोतरी के बावजूद अधिक पैदावार देने में सक्षम डब्ल्यू एच 1309 किस्म

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यू एच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस किस्म का हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च के महीने में तापमान की बढ़ोतरी देखी गई है जिससे गेहूं की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस किस्म की पैदावार पर तापमान के बढ़ने का असर नहीं होगा।

विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। इस टीम में डॉ. विक्रम सिंह, एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाई.पी. एस. सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आर.एस. बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।

फोटो चरण कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में किसानों के खेत पर किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो कि चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 (48.2 क्विंटल/हैक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि गेहूं की नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 की बिजाई का उचित समय एक दिसम्बर से 20 दिसम्बर है तथा बीज की मात्रा 125 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर है। इस किस्म की अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए शुद्ध नाइट्रोजन 150, फास्फोरस 60, पोटाश 30, जिंक सल्फेट 25 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर प्रयोग की सिफारिश की जाती है। यह नई किस्म पछेती बिजाई वाले क्षेत्रों के लिए वरदान साबित होगी।

123 दिन में पक कर तैयार हो जाती है डब्ल्यू एच 1309

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया कि डब्ल्यू एच 1309 किस्म 83 दिन में बालियां निकालती है तथा 123 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की बालियां लंबी व भूरे रंग की है। इस किस्म की ऊंचाई 98 सेंटीमीटर है, जिससे इसके गिरने का खतरा न के बराबर है। इस किस्म का दाना मोटा है। इसमें 13.2 प्रतिशत प्रोटीन, हेक्टोलीटर वजन 81.9 केजी/एचएल व अवसादन मान 54 मि.ली. है। अतः पौष्टिकता व चपाती बनाने के लिए यह किस्म अच्छी है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठकपक्ष	10.9.2025	--	--

हकृवि ने विकसित की गेहूं की नई तापमान रोधी पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309

तापमान में बढ़ोतरी के बावजूद अधिक पैदावार देने में सक्षम डब्ल्यू एच 1309 : प्रो. बी.आर. काम्बोज

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 10 सितम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग द्वारा गेहूं की पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। डब्ल्यू एच 1309 किस्म अन्य सभी किस्मों की तुलना में गर्मी के प्रति अधिक सहनशील है। इस किस्म का हरियाणा की राज्य बीज उप समिति द्वारा अनुशंसा की गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण मार्च के महीने में तापमान की बढ़ोतरी देखी गई है जिससे गेहूं की फसल पर दुष्प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस किस्म की पैदावार पर तापमान के बढ़ने का असर नहीं होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने नई किस्म को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों को बधाई दी। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि धान की कटाई में देरी, जलभराव या अन्य कारणों से हरियाणा के 15 से 20 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूं की बिजाई में देरी हो जाती है। इसके मद्देनजर विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम द्वारा गेहूं की अधिक पैदावार देने वाली नई पछेती किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की गई है। सिंचित परिस्थितियों के परीक्षणों में उपरोक्त किस्म ने औसत उपज 55.4 क्विंटल/हैक्टेयर दर्ज की है और इसकी अधिकतम उपज 64.5 क्विंटल/हैक्टेयर है। हरियाणा के विभिन्न जिलों में किसानों के खेत पर किए प्रयोगों में इसकी औसत उपज 54.3 क्विंटल/हैक्टेयर रही, जो कि चेक किस्म डब्ल्यू एच 1124 (48.2 क्विंटल/हैक्टेयर) की तुलना में 12.7 प्रतिशत अधिक रही। उन्होंने बताया कि जनवरी के प्रथम सप्ताह तक इसकी बुवाई की जा सकती है। विश्वविद्यालय के गेहूं एवं जौ अनुभाग के वैज्ञानिकों की टीम ने गेहूं की एक नई किस्म डब्ल्यू एच 1309 विकसित की है। इस टीम में डॉ. विक्रम सिंह, एम.एस. दलाल, ओपी बिश्नोई, दिव्या फोगाट, योगेन्द्र कुमार, हर्ष, सोमवीर, वाई.पी. एस. सोलंकी, राकेश कुमार, गजराज दहिया, आर.एस. बेनीवाल, भगत सिंह, रेणु मुंजाल, प्रियंका, पवन कुमार व शिखा का इस किस्म को विकसित करने में अहम योगदान रहा।